वर्ष - 4

अंक - 18

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

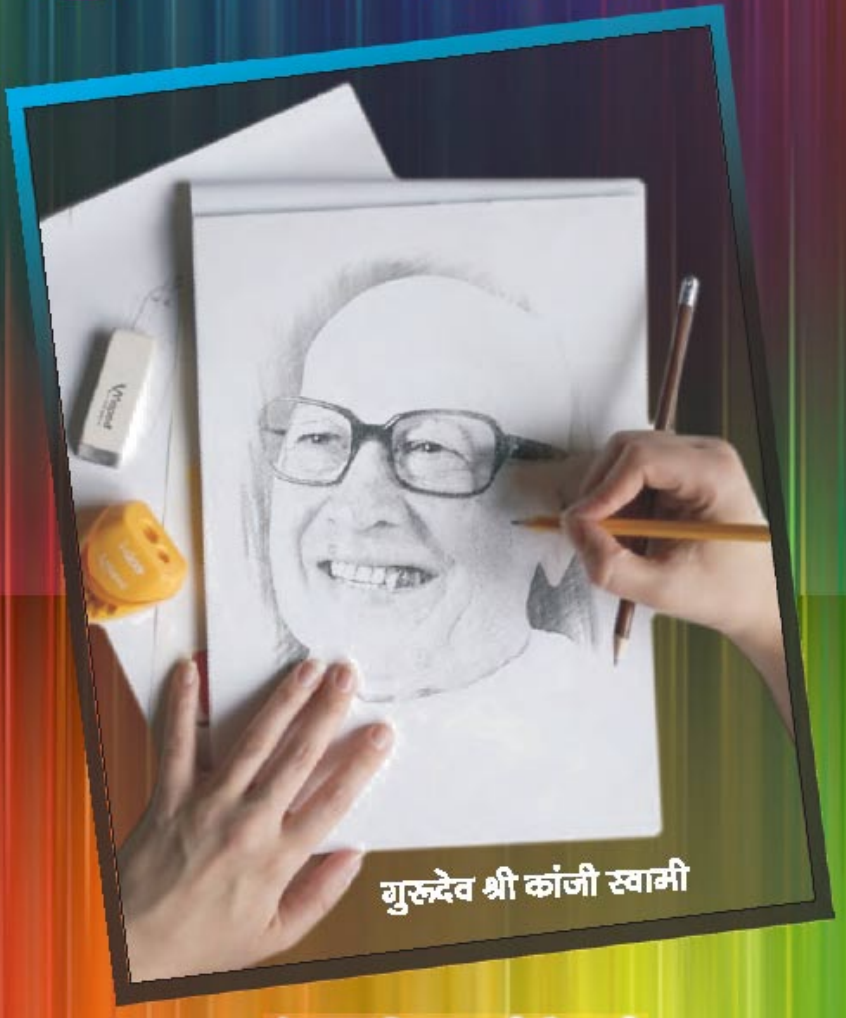

गुरुदेव श्री कांजी स्वामी

संपादक - विराग शास्त्री, वेवलाली

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, नवलपुर (म.प्र.)

भारत सरकार द्वारा जारी किये जैन डाक टिकिट

18.10.1929 – गिरनार (सौराष्ट्र राज्य के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर)

06.05.1935 – भगवान शीतलनाथ जैन मंदिर, कोलकाता

15.08.1949 – शत्रुजंय मंदिर, पालीताना

01.07.1966 – पार्श्वनाथ जैन मंदिर, खजुराहो

30.12.1972 – विक्रमभाई साराभाई (प्रसिद्ध वैज्ञानिक)

13.11.1974 – पावापुर जल मंदिर (भगवान महावीर के 2500 निर्वाणोत्सव पर)

10.01.1975 – World Hindi Convention (Image of Jain Saraswati)

12.04.1975 – World Telgu Conference (Image of Jain Saraswati)

27.07.1978 – कच्छ का जैन म्यूजियम

09.02.1981 – गोम्टेश्वर बाहुबली (प्रतिमा निर्माण के 1000 वर्ष पूरे होने पर)

09.05.1988 – डॉ. कर्मवीर बाहुराव पाटिल

24.08.1991 – मिश्रीलालजी (श्वेताम्बर साधु)

20.12.1994 – भगवान आदिनाथ

28.01.1998 – डॉ. जगदीश चंद्र जैन (प्रसिद्ध लेखक और शिक्षाविद्)

20.10.1998 – आचार्य तुलसी (तेरापंथ स्थानक मुनि)

31.12.2000 – राजा भामाशाह (दानवीर महान जैन राजा)

06.04.2001 – भगवान महावीर (2600 जन्मजयंती के अवसर पर)

21.07.2001 – सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य (प्रसिद्ध जैन सम्राट)

18.11.2001 – वी. शांताराम (भारतीय सिनेमा जनक)

09.08.2002 – आचार्य आनंद ऋद्धि महाराज (तेरापंथ स्थानक मुनि)

27.05.2004 – डॉ. इन्द्रचंद्र शास्त्री

30.06.2004 – आचार्य भिक्षु (तेरापंथ स्थानक मुनि)

23.11.2004 – बालचंद हीराचंद (प्रसिद्ध उद्योगपति)

02.12.2005 – जवाहरलाल दरोरा

आध्यात्मिक,तात्विक,धार्मिक और नैतिकता से परिपूर्ण

बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, (जबलपुर), देवलाली

प्रबंध संपादक
श्रीमति स्वस्ति जैन, देवलाली

प्रकाशकीय प्रबंधक
श्री मनीष जैन 'मंगलम्', जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
बंगला नं. 50, कहान नगर सोसायटी,
बेलतगांव रास्ता, लाम रोड, पो. देवलाली
जि. नासिक 422401 महा.
मो. 9373294684, 0253-2491044
e-mail - chahaktichetna@yahoo.com

सदस्यता शुल्क
400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
एक प्रति 20 रू.

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप चहकती चेतना के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक,फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106

1. संपादक मण्डल / सूची	1
2. जिनवाणी	2
3. संपादकीय	3
4. हमारे तीर्थ – गोपाचल पर्वत	4
5. जैन समाज के गौरव	5
6. जैसी करनी वैसा भरनी	6
7. पेप्सी कोला नहीं पियेंगे	7
8. चीकू की श्रद्धा	8
9. बर्फ के गोलों से सावधान	9
10. भक्तामर	10–11
11. एक बालक का समाधान/शिविर गीत	12
12. प्यारी कवितायें	13
13. जन्मे महावीर/ऐसा भी क्रिकेट	14
14. नल की कहानी	15
15. कर्मों का उदय	16–17
16. गुटखा	18–19
17. नल की कहानी	20–22
18. पांडवों का वैराग्य	23–24
19. इन्हें भी जानिये	25
20. दो भाइयों का प्रेम	26–27
21. प्रेरक प्रसंग – वैरागी हाथी	28
22. एक था कबूतर	29
23. अब नहीं दिलाऊँगा	30–31
24. प्रश्न–उत्तर	32
25. जन्मदिवस	33
26. पेंटिंग	34
27. कॉमिक्स – उत्तम त्याग	35–36

जिनवाणी

जिनवाणी किसे कहते हैं ?

जो धर्म का ज्ञान कराती है ।

जिनवाणी किसकी वाणी है ?

अरिहन्त भगवन्तों की वाणी है ।

जिनवाणी कब पढ़ते हैं ?

प्रतिदिन योग्यकाल में विनय से पढ़ते है ।

जिनवाणी कौन सा ज्ञान कराती है ?

आत्मा-परमात्मा, निज-पर का ज्ञान कराती है ।

जिनवाणी कैसे पढ़ना चाहिये ?

हाथ-पैर, मुख धोकर पढ़ना चाहिये ।

जिनवाणी कैसे रखना चाहिये ?

ऊँचे आसन तथा ऊँचे हाथ पर ही रखना चाहिए
पैर पर नहीं रखना चाहिये ।

जिनवाणी पढ़ने से क्या लाभ हैं ?

बुद्धि का विकास होता है, अच्छे-बुरे कार्यों का ज्ञान होने से दोष का त्याग और गुण ग्रहण का भाव होता है, कषाय मंद होती है और भेद विज्ञान होता है । ।

जिनवाणी के और कौन से नाम हैं ?

जिनआगम और जिनसरस्वती आदि ।

संपादकीय

प्रिय बच्चो! अब आपकी छुट्टियाँ हो गई हैं और आप लोग खूब मस्ती कर रहे होंगे। लेकिन मस्ती के साथ समय का सदुपयोग भी करना। यदि आपके आसपास कोई बाल शिविर लग रहा हो तो उसमें अवश्य जाना। अभी तो सीखने का समय है और बचपन में बुद्धि तीव्र होने से कोई भी कला जल्दी सीख सकते हैं। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है वैसे वैसे कार्य की अधिकता और अन्य अनेक बातों और जिम्मेदारियों के कारण समय भी नहीं मिलता और दिमाग भी काम नहीं करता इसलिये तो कहा कि बचपन ज्ञान अभ्यास करने को सर्वोत्तम समय है।

अप्रेल माह में भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयंती आ रही है। इसे धूमधाम से मनाना है। भगवान महावीर की पूजन करना और भगवान जैसे बनने की भावना भाना।

आपका
विराग

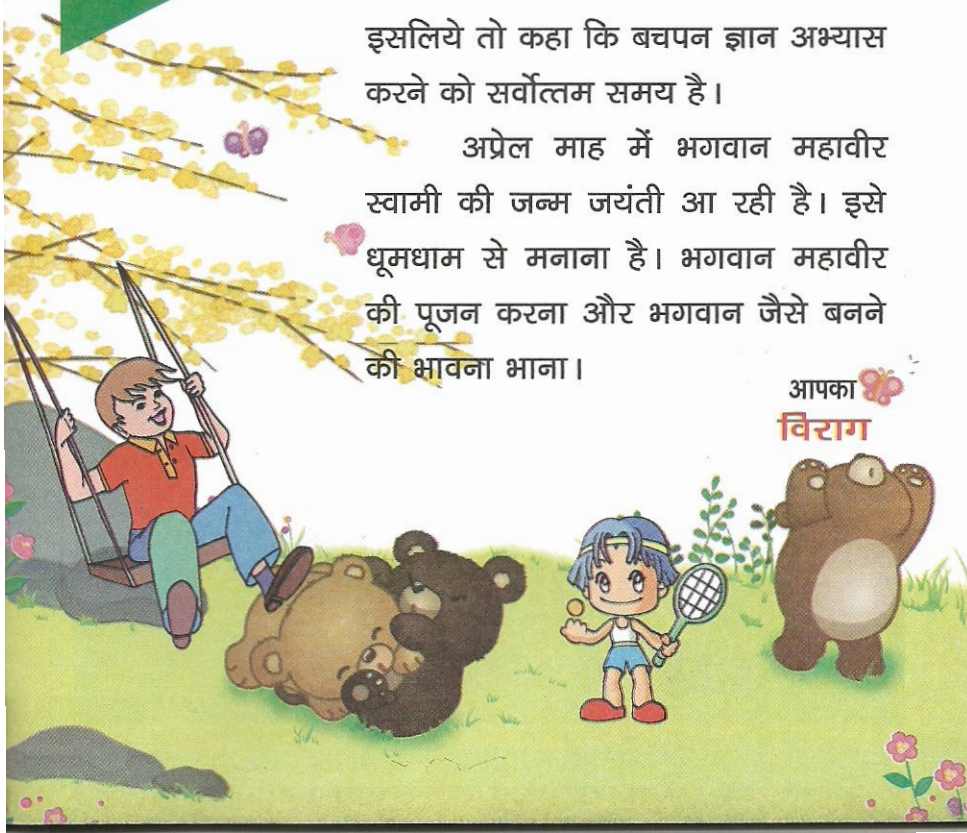

हमारे तीर्थ क्षेत्र

गोपाचल पर्वत
ग्वालियर

मध्यप्रदेश की प्रमुख ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर में गोपाचल पर्वत तीर्थ के रूप मे विख्यात है। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की दिव्य ध्वनि खिरी थी। साथ ही यहाँ से सुप्रतिष्ठित केवली को निर्वाण पद की प्राप्ति हुई थी। यहाँ पर्वत पर 26 जिनालय हैं इनमें लगभग 1500 से अधिक प्रतिमायें हैं। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की 42 फुट ऊँची और 30 फुट चौड़ी संसार की सबसे बड़ी प्रतिमा विराजमान है। ये सभी प्रतिमायें सन् 1398 से सन् 1536 के बीच यहीं पर्वत पर बनाकर विराजमान की गई थीं। सन् 1800 से आसपास मुस्लिम शासकों द्वारा अधिकांश प्रतिमायें खण्डित कर दी गई। इस क्षेत्र को दर्शन कर जैन धर्म के वैभव और प्राचीनता का ज्ञान होता है। पर्वत की तलहटी मे एक लघु मंदिर विराजमान है। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, दिल्ली द्वारा इस क्षेत्र की इतिहास को दर्शानेव वाली सचित्र प्रामाणिक पुस्तक का प्रकाशन किया गया है।

ग्वालियर से सोनागिर सिद्धक्षेत्र 70 किमी, सिंहोनियाजी 60 किमी, शिवपुरी 115 किमी की दूरी पर स्थित है।

जैन समाज के गौरव

भारत सरकार के द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले श्रेष्ठ व्यक्तियों को भारत रत्न, पद्मश्री, पद्म विभूषण, पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। जैन समाज के अनेक अणमान्य नागरिकों ने समाज का गौरव बढ़ाया है। जानिये कौन हैं वे –

PADMA BHUSHAN AWARDEES

Ms. Mallika Sarabhai	Arts, Gujarat	2010
Shri S.P. Oswal	Trade & Industry, Punjab	2009
Shri D.R. Mehta	Social Work, Rajasthan	2009
Dr. Kirit Shantilal Parikh	Pulic Affairs, Delhi	2007
Prof. Bhikhu Parekh	Literature & Education, MH.	2006
Shri Deepak Parekh	Trade & Industry, Maharashtra	2006
Ms. Devki Jain	Social Work, Karnataka	2006
Ms. Dinesh Nandini Dalmia	Literature & Education, Delhi	2004
Shri Komal Kothari	Arts, Rajasthan	2003
Dr. Kantilal Hastimal Sancheti	Medicine, Maharashtra	2002
Pravinchandra V. Gandhi	Trade & Industry, Maharashtra	2000
Shri D. Veerendra Heggade	Social Work, Karnataka	2000
Sharan Rani Backliwal	Arts, Delhi	1998
Dr. Laxmi Mall Singhvi	Public Affairs, Delhi	1992
Dalsukh Dahyabhai Malvania	Literature & Education, Gujarat	1992
Smt. Mrinalini Sarabhai	Arts, Gujarat	1989
Shri Girilal Jain	Literature & Education, Delhi	1988
Shri Shrijans Prasad Jain	Social Work, Maharashtra	1974
Pandit Sukhlalji Sanghavi	Literature & Education, Gujarat	1972
Dr. Shantilal C. Sheth	Medicine, Maharashtra	1971
Devchand Chhaganlal Shah	Social Work, Maharashtra	1971
Shri Jainendra Kumar Jain	Literature & Education, Delhi	1969
Shri Kasturbhai Lalbhai	Trade & Industry, Gujarat	1967
Shri Akshy Kumar Jain	Literature & Education, Delhi	1966
Dr. Vikram Ambalal Sarabhai	Science & Engineering, Gujarat	1962
Dr. Daulat Singh Kothari	Civil Service, Delhi	1959
Bhaurao Payagounda Patil	Social Work, Maharashtra	1959
Smt. Hansa Jivraj M. Mehta	Social Work, Maharashtra	

PADMA VIBHUSHAN AWARDEES

1992	Dr.V. Shantaram	Arts, Maharashtra
1973	Dr. Daulat Singh Kothari	Science & Engineering, Delhi
1972	Dr. Jivraj N. Mehta	Public Affairs, Maharashtra
1972	Dr. Vikram Ambalal Sarabhai	Science & Engineering, Gujarat
1969	Dr. Mohan Singh Mehta	Civil Service, Rajasthan

PADMA SHRI AWARDEES

2010	Shri Kranti Shah	Social Work, Maharashtra
2010	Dr. Sudhir M. Parikh	Social Work, West Bengal
2009	Shri Alok Mehta	Literature & Education, Delhi
2009	Shri Bhavarlal Hiralal Jain	Science & Engineering, Mh.
2009	Dr. Rakesh Kumar Jain	Medicine, Uttarakhand
2004	Dr. Ashwin Balachand Mehta	Medicine, Maharashtra
2004	Shri Kanhaiya Lal Sethia	Literature & Education, W.Bengal
2004	Dr. Kumarpal Desai	Literature & Education, Gujarat
2004	Smt. Sharayu Daftary	Trade & Industry, Maharashtra
2004	Prof.(Smt) Sunita Jain	Literature & Education, Delhi

जैसी करनी वैसी भरनी

प्रश्न – श्रीपाल को कुष्ठ रोग क्यों हुआ ?

उत्तर – श्रीपाल ने अपने पूर्व भव में खेल – खेल में एक मुनिराज को कोढ़ी कहा था इसलिये इस पाप के फल में श्रीपाल को कुष्ठ रोग हुआ।

प्रश्न – अंजना सती ने 22 वर्ष तक अपने पति का वियोग क्योंसहा ?

उत्तर – पूर्व भव में अंजना ने सौत से लड़ाई करके उसकी जिनप्रतिमा को 22 पल तक उससे छिपाकर रखा था अतः अंजना सती ने 22 वर्ष तक अपने पति का वियोग सहा ।

प्रश्न – मुनि ऋषभदेव को छः माह तक आहार क्यों नहीं मिला ?

उत्तर – मुनि ऋषभदेव ने पूर्व पर्याय में खेती के रक्षा के लिये बैलों के मुंह में जाली बंधवाने को आदेश दिया था, अतः मुनि ऋषभदेव की पर्याय में उन्हें छः माह तक आहार नहीं मिला ?

प्रश्न – आचार्य कुन्दकुन्द इतने महान आचार्य कैसे हो गये ?

उत्तर – आचार्य कुन्दकुन्द ने अपनी पूर्व पर्याय में कौण्डेश ग्वाले की पर्याय में एक मुनिराज को अत्यंत भक्ति और श्रद्धा से एक शास्त्र दान दिया था। इसी दान के प्रभाव से वे महान आचार्य हो गये।

प्रश्न – राजा श्रेणिक को सम्यग्दर्शन होने के बाद भी नरक क्यों जाना पड़ा ?

उत्तर – राजा श्रेणिक ने यशोधर मुनिराज के गले में बैर के कारण एक मरा हुआ सर्प डाला था, जिससे उन्हें नरक जाना पड़ा।

पेप्सी कोला नहीं पियेंगे

जैन दर्शन के अनुसार वही व्यक्ति जैन जो सामान्य रूप से तीन नियमों का पालन करता है।

1. प्रतिदिन जिनेन्द्र दर्शन
2. रात्रि भोजन त्याग
3. पानी छानकर पीना।

बिना छने पानी में अनंत जीवों का मरण होने से महापाप बताया गया है साथ ही बिना छना पानी पीने से स्वास्थ्य खराब होने का खतरा बना रहता है। पेप्सी, कोका कोला, लिम्का, मिरिन्डा, फेन्टा आदि सभी कोल्ड ड्रिंक्स बिना छने पानी से बने होते हैं। बाजार में आने के लगभग 5 माह पूर्व ही इन्हें तैयार कर लिया जाता है। यदि इतने पहले कोल्ड ड्रिंक्स न तैयार हो तो पूरे भारत के विशाल मार्केट में इनके उत्पादन नहीं पहुँच पायेंगे।

1. भारत सरकार द्वारा अनेक कोल्ड ड्रिंक्स की जांच करवाई गई और सेन्टर फॉर साइंस एंड एनवायरमेन्ट (सी.एस.ई.) की जांच में इन कोल्ड ड्रिंक्स में लिंडेन कीटनाशक, न्यूरोटॉक्सिन, क्लोरो पायरीफॉस जैसे जहरीले केमिकल्स पाये गये।
2. विश्व के कई देशों में कोका कोला और पेप्सी जैसे कोल्ड ड्रिंक्स के बेचने पर प्रतिबंध लगाया गया है।
3. भारत के ही कई गांवों में खेतों में अनाज को कीड़ों से बचाने के लिये मंहगी कीटनाशक दवाओं के स्थान पर पेप्सी और कोका कोला का छिड़काव किया जा रहा है। किसानों को कीटनाशक के स्थान पेप्सी बहुत और लाभदायक सिद्ध हो रही है।
4. कई नगरों में बाथरूम साफ करने के लिये एसिड के स्थान पर पेप्सी, कोका कोला जैसे कोल्ड ड्रिंक्स का प्रयोग किया जा रहा है।

आप समझ सकते हैं कि इसका प्रयोग हमारे स्वास्थ्य के लिये कितना हानिकारक है। आप निर्णय आप पर है।

चीकू की श्रद्धा

चीकू बहुत अच्छा लड़का था। पर वह अपने पिता की आदतों से बहुत दुःखी था क्योंकि उसके पिता को जुआ खेलने की और शराब पीने की आदत लग गई थी। शराब के नशे में वे उसकी मम्मी को मारते थे। वह रात – दिन सोचता कि कैसे उनकी आदत छुड़ाई जाये? एक दिन वह अपने पिता के साथ बाजार जा रहा था तो रास्ते में लगे हुये लाउड स्पीकर से किसी विद्वान के प्रवचन की आवाज आ रही थी। मालूम हुआ कि जैन मंदिर में कोई बड़ा महोत्सव हो रहा है जिसके कारण आसपास की गलियों में लाउड स्पीकर लगाये गये हैं। चीकू पिता को जबरदस्ती करके प्रवचन सुनने जिनमंदिर ले गया। प्रवचन में सप्तव्यसन एवं उसके फल में होने वाले दुःखों की कथा पंडितजी सुना रहे थे कि सप्त व्यसन के फल में नरक में कैसे भयंकर दुःख भोगने पड़ते हैं। उसके पिता प्रवचन सुनकर अत्यंत प्रभावित हुये और वे सोचने लगे कि यदि मैंने ये बुरी आदतें नहीं छोड़ी तो मुझे भी नरक के भयंकर दुःख सहन करना पड़ेंगे। उन्होंने तुरंत जुआ और शराब छोड़ने का निर्णय कर लिया। इस तरह चीकू का परिवार सुखी हो गया। अब जब भी वह जैन मंदिर के सामने से निकलता है श्रद्धा से उसका सिर अपने आप झुक जाता है।

– अचिन्त्य संजय जैन, खनियांधाना

सावधान
बर्फ के गोलों से बचकर रहें

जैसे जैसे गर्मी बढ़ती है, बाजार में बर्फ, लस्सी, आइसक्रीम, जलजीरा, रसना, शरबत, जूस गन्ने का रस, मेंगो शेक की दुकानें बढ़ जाती हैं। चौपाटी अथवा गलियों में बर्फ की दुकानें सज जाती हैं। बढ़ती गर्मी में बच्चे हों बड़े इन ठंडी - ठंडी आईसक्रीम और रंगों से सजे बर्फ के गोले देखकर सभी का मन खाने के लिये ललचाता है। गर्मी के समय में होने वाली शादियों में बर्फ का बहुत उपयोग किया जाता है। बच्चों को बर्फ के गोले बहुत अच्छे लगते हैं लेकिन इन ठंडी और मीठी आइसक्रीम, रंग-बिरंगे बर्फ के गोलों की कड़वी सच्चाई कोई नहीं जानता, बच्चे तो बिल्कुल भी नहीं जानते। इसी समय डॉक्टर के यहाँ बीमार होने वाले व्यक्तियों की संख्या बढ़ जाती है। इन बीमार व्यक्तियों में डायरिया, टाइफाइड, पीलिया, गेस्ट्रो इनट्राइटिस की सर्वाधिक संख्या होती है। सच बात तो यह है कि देश में विशेष रूप से खाने के लिये बर्फ बहुत कम शहरों में बनाई जाती है। एक सर्वे के अनुसार पूरे देश में जितनी भी बर्फ बनाने की फैक्ट्रियाँ हैं उनमें से 95 प्रतिशत फैक्ट्रियों की बर्फ खाने योग्य नहीं है। अधिकांश फैक्ट्रियों में गंदे पानी का प्रयोग करके बर्फ बनाया जाता है। यहाँ बनने वाले बर्फ का प्रयोग उद्योगों और अस्पतालों में किया जाता है। लाश को बदबू और सड़ने से बचाने के लिये भी इस बर्फ का प्रयोग किया जाता है।

वैसे भी बाजार में बिना छने पानी से बनने वाली आइसक्रीम और बर्फ अभक्ष्य होने से खाने योग्य ही नहीं। ये पानी न तो फिल्टर होता है और न दूध वाली आइसक्रीम में दूध का प्रयोग किया जाता है। दूध की जगह मिल्क पाउडर और आरारोट का प्रयोग किया जाता है। यदि आप बीमार होने से और पाप से बचना चाहते हैं तो इन बर्फ के गोलों और सड़क पर बिकने वाली आइसक्रीम से बचें। आइसक्रीम फैक्ट्रियों की गंदगी को देखकर किसी का भी मन सड़क पर बिकने वाली आइसक्रीम खाने का नहीं करेगा । गंदे पानी से बनाई गई आइसक्रीम को सुन्दर पैकिंग के साथ बेचा जाता है। फूड स्पेशलिस्ट डॉ अजय तिवारी ने बताया कि सनस्ट्रोक के साथ इन आइसक्रीम और बर्फ को खाकर रोज हजारों लोग बीमार होते हैं।

आइसक्रीम, श्रीखंड और बर्फ के गोले आदि में मिठास के लिये शक्कर के स्थान पर सेक्रीन का उपयोग किया जाता है। सेक्रीन के अधिक उपयोग से बीमारियाँ होने की प्रबल आशंका है। आप यह आप निर्भर है कि आप शुद्ध आईसक्रीम खाना चाहते हैं या अशुद्ध आइसक्रीम खाकर बीमार होना चाहते हैं और पाप करना चाहते हैं....

भक्तामर स्त्रोत

भक्तामबर स्त्रोत के दस छंदों का हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद आप पहले के अंक में पढ़ चुके है अब आगे ...

11

रूप राशि ऐसी मन मोहन इक टक लखें जिसे सब जन।
तुझे देख संतोष कहीं फिर नहिं पाते जग में सुनयन।
शशि सम उज्ज्वल क्षीर सिन्धु का जिसने पी रक्खा हो नीर।
कब पीना चाहेगा वह खारे सागर का भी नीर।

Who has seen thy face beautiful,
Finds solace nowhere else,
Who has tasted the see of milk,
Never drinks from the salt-sea.

12

जिन रागादिक शून्य कणों से है तेरी रचना भगवान।
वे उतने ही थे जग में अब और कहां ऐसे परमाणु।
अनुपम छबि है इसमें तेरी तुझसा और रूप न अमर।
जन मन हर्षक चित्त आकर्षक छाना है मैंने संसार।।

Atoms, that were peace bestowing,
Have combined to make thy from
None like them are now te be found,
Hence no one can equal thee.

13

कहां तिहारा सुन्दर तन यह सुर नर नयनहारी।
सुषमा से जीती जग त्रय की जिसमें उपमायें सारीं।
कहां कलंकित चन्द्र बिम्ब तुझसे क्या है उसकी तुलना।
सूर्य उदय होते ही जो वाक–पत्र सम पड़ जाता है पीला।

Thy presence winsome and matchess,
Captures hearts of men and gods,
How can moon equal its lustre ?
At sunrise it turns it all pale.

to be cont..

14

चन्द्र कला से जो निर्मल है शुभ्र मनोहर सौम्य जिनेश।
गुण माला समूह तीनों लोकों से पार जाये तेरे परमेश।
हे जगदीश्वर हे नाभिश्वर तेरे आश्रित जो नर नार।
रोक टोक बिन चहुँ दिश में फिरते हैं इच्छा अनुसार।।

Attributes, pure than moon - shine,
Cross the who whole of universe,
Those protected by thee, O'lord,
Can wander about at will.

15

वैचित्र्य नहीं इसमें कुछ भी अगर अप्सरायें चंचल।
हाव भाव से कर न सकें तुझको विचलित है धर्माचल।
प्रलय काल की तीव्र वायु जो पर्वत तुरन्त हिलाती है।
मन्द्राचल स्थिर सुधीर को नहीं कदापि डिगाती है।

Nymphs, no wonder with their. pranks,
Can't temper with thy virtue,
Mountains may be blawn off by winds,
Summer can not leave its place.

16

तेल रहित निर्धूम बत्ति शून्य हैं तू भगवान दीपक।
प्रलय समीर बुझा सके न सके ऐसा विचित्र है तू दीपक।
समस्त विश्व प्रकाशित करता है क्षण में तू जगदीश्वर।
अंधकार मिट जाये मन का विनशे सहसा पाप तिमिर।।

Smoke - less oil - less lamp though thou art,
Fillest univeres with light,
Winds that can blow off even hills,
Can not put out this lamp, Lord.

एक बालक का समाधान

गुरुदेवश्री कानजी स्वामी छोटे बालकों के साथ भी मधुरता से बात करते थे। एक बार छात्रावास का एक बालक आया और उसने गुरुदेवश्री से पूछा –

गुरुदेव! आप गोरे और मैं काला – ऐसा क्यों ?

गुरुदेव ने बड़े प्रेम से उत्तर दिया – भाई! गोरा और काला तो शरीर है आत्मा गोरी और काली कहाँ है ? मैं तो जीव हूँ और तुम भी जीव, हम सब समान..... बस! जीव कोई गोरा या काला नहीं, जीव तो ज्ञानस्वरूप है। ये तो शरीर का रंग है।

बालक प्रसन्न होकर बोला – फिर तो मैं भी काला नहीं, मैं तो ज्ञान स्वरूपी हूँ। वाह! वाह!

शिविर गीत

चाहे अंधियारा हो या दूर किनारा हो ।
आवाज हमें देना, हम दौड़े आयेंगे।
चाहे गर्मी सर्दी हो, या बिजली चमकती हो।
आवाज हमें देना, हम दौड़े आयेंगे।

चाहे अंधियारा हो.....

हम मंदिर जायेंगे, हम पूजा रचायेंगे।
जिनवाणी सुनने को, हम दौड़े आयेंगे।

चाहे अंधियारा हो.....

हम शिविर लगायेंगे, अज्ञान नशायेंगे।
जिनवाणी पढ़ने को, हम दौड़े आयेंगे।

चाहे अंधियारा हो.....

हम मुनि बन जायेंगे, निज ध्यान लगायेंगे।
आवाज नहीं देना, हम कभी न आयेंगे।

चाहे अंधियारा हो.....

हम मुक्ति पायेंगे, हम सिद्ध बन जायेंगे।
आवाज नहीं देना, हम कभी न आयेंगे।

चाहे अंधियारा हो.....

– पण्डित सुशीलकुमार जैन
इंदौर

प्यारी कवितायें

चुन्नू मुन्नू दो भाई।
रसगुल्ले पर हुई लड़ाई।।
चुन्नू बोला मैं खाऊँगा।
मुन्नू बोला मैं खाऊँगा।
हल्ला सुनकर मम्मी आई।
दोनों को फिर डांट लगाई।।
कभी न लड़ना ना ही झगड़ना।
आपस में हिल – मिलकर रहना।
दोनों प्रेम से गले मिले।
मन में प्रेम के फूल खिले।

POEM

राग-द्वेष मोह का कर दो अब **End**
पूजा पाठ प्रवचन का करना है **Attend**
कोध मान माया लोभ को कर दो तुम **Suspend**
देव-शास्त्र-गुरु को बनाओ अपना **Friend**
आत्मा है हमारा सबसे प्यारा **Land**
आओ इसको जानें हम सब बच्चे **Land In Hand.**
कहान गुरु ने कहा है जैन धर्म को मत करना **Off End.**
सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र का मधुर बजेगा **Band**

बाल कवितायें

जन्मे महावीर

धम धम धम धम धम धम धम धम
शोर हुआ जागो जागो जनमे महावीर हैं।
छम छम छम छम छम छम छम छम
घुंघरू बजे, बजे पायल झनकार है।
त्रिशला माँ ने मोद दीनो, पिता ने दुलार कीनो।
कितनो सलोनो लागे मेरो अतिवीर है।
बाल महावीर मानो से मुद्रा से बोल उठे,
ये तो है शरीर रूप, आतम अशरीर है।

ऐसा भी क्रिकेट

आत्मा है बेट्समेन, कर्म उदय बॉलिंग करे।
ज्ञानी आत्मा का हर शॉट जोरदार है।
चाहे कैसी बॉल करे, कर्म का बॉलर ये,
समता के छक्के - चौके, नाचे गुण अपार हैं।
चाहे गुगली फेंके, चाहे फेंके फास्ट बॉल।
कर्म समूह की हुई अब हार है।
मोक्ष वर्ल्ड कप पाया, ज्ञानी सिरमौर बने,
ऐसा खेलो क्रिकेट, तो बात जोरदार है।

. विराग जैन

नल की कहानी

उस गली के लोग बड़े लापरवाह थे. दिनरात वे नल को खुला छोड़ देते.

गली के सारे नल बहुत परेशान थे.

कितने मूर्ख हैं यहां के लोग. पानी जैसी अनमोल चीज की भी इन्हें कोई चिंता नहीं.

मैं तो बहतेबहते थक गया हूं. एक दिन इन्हें जरूर मजा चखाऊंगा,

एक सुबह -

आज पानी क्यों नहीं आ रहा?

नल आपस में मुसकरा रहे थे.

कल मैं ने बूढ़े दादाजी नल से कहा था कि आज हमारे अंदर पानी मत छोड़ना.

कर्म उदय की विचित्रता

जीव जैसे कर्म करता है वैसा फल उसे निश्चय ही भोगना पड़ता है। देखिये पूर्व में किये गये पाप के फल में जीव को कितनी प्रतिकूलतायें भोगना पड़ती हैं।

सावधान! पाप से बचिये वरना हमारा कल भी ऐसा होगा !

1. इस बच्ची की उम्र अधिक है परन्तु दिमाग बच्चों के जैसा।
2. यह व्यक्ति इतना मोटा कि वर्षों से अपने घर के बाहर ही नहीं निकला।
3. देखिये! कितने बाल इनके शरीर पर।
4. इनका एक हाथ तो सामान्य है परन्तु दूसरे हाथ की हथेली इतनी बड़ी! आश्चर्य!
5. ये कोई बंदर नहीं है, एक आम आदमी है। जिसका शरीर बंदर के जैसा दिखाई देता है।

3

4

5

6. बच्चा छोटा पर सिर कितना बड़ा।

7. है आदमी परन्तु हाथ और पैर पेड़ की शाखाओं के जैसे। जैसे पेड़ के तने और शाखायें होती हैं वैसे ही इनके हाथ और पैर हैं, इनके चेहरे पर भी छाल पैदा होती है।

8. इनके चेहरे की बनावट देखकर डर लग रहा है ये पाप का फल।

6

7

8

गुटखा खाने वालों की दशा

गुटखा खाने वाले बड़े शौक से गुटखा खाते हैं। इन लोगों को गुटखे के मजे में उस पर लिखी चेतावनी भी नहीं दिखती कि गुटखा खाने से कैंसर हो सकता है। गुटखा खाना स्वास्थ्य के लिये बहुत हानिकारक है। इन चेतावनियों को न मानने वालों की दशा देखिये।

जब तक मैं न कहूं, तबतक वे पानी छोड़ेंगे नहीं.
अब देखो, पानी के बिना ये लोग कैसे परेशान होते हैं.
पानी नहीं आने से गली के लोग परेशान हो गए.
रामू की मां, नहाने के लिए पानी नहीं है क्या?
कमाल है, यहां रसोई के लिए पानी नहीं है और तुम्हें नहाने की पड़ी है.
आज भी पानी नहीं आया. अब क्या होगा.
किसी भी नल में पानी नहीं आ रहा था, चारों ओर हाहाकार मचा था.
अरे, मुझे कोई पीने के लिए भी तो पानी दे दो.

सभी घरों का पानी खत्म हो गया था.

उफ...अब क्या करें? आसपास कोई नल या कुआं भी तो नहीं है.

कई किलोमीटर दूर से गली वालों को पानी लाना पड़ा. बाद में वहां भी लड़ाई शुरू हो गई.

गली के लोग पछतावा करने लगे.

जब गली में दिनरात नल बहा करते थे, तब तो हमें होश नहीं आया.

ये चुन्नू का बच्चा तो नल खुला छोड़ कर नाचता रहता था. क्यों, याद है न?

और मुन्नू, तू कौन सा नल बंद करता था. तू भी तो पानी इधरउधर फेंकता रहता था.

एक टीचर ने कहा -

लड़ाई बंद करो. यह सोचो कि हम सब पानी कैसे बचाएं. सब से पहले नल खुला छोड़ देने की आदत बदलो. जहां भी नल खुले दिखाई दें, उन्हें तुरंत बंद करो.

पानी की कीमत समझो.

अब हम सब आप की बातें जरूर मानेंगे.

रात में गली के सभी नल चुपचाप इन सब की बातें सुन कर मुसकरा रहे थे.

दूसरे दिन नल में पानी आया. सब ने सावधानी से पानी भरा. सभी नल ठीक से बंद किए. पानी का एक बूंद भी बरबाद नहीं किया.

पानी की एकएक बूंद की कीमत वे जान गए थे.

पांचो पांडवों का वैराग्य

हस्तिनापुर राज्य के लिए कौरवों व पांडवों के मध्य कुरुक्षेत्र में भयंकर युद्ध हुआ था। पांडवों के प्रमुख युधिष्ठिर और कौरवों के दुर्योधन थे। यह युद्ध लम्बे समय तक चला था। अन्त में पांडवों को विजय प्राप्त हुई, कौरवों का सर्वनाश हुआ। विजय के पश्चात् युधिष्ठर को हस्तिनापुर राज्य का राजा बनाया गया। पांडवगण ने हस्तिनापुर राज्य का सुचारु रूप से संचालन किया।

पांडवों के शासन काल में एक भयंकर घटना घटी। द्वारका नगरी अग्नि में जलकर भस्म हो गई। उनके सगे सम्बन्धियों की भी इस अग्निकांड में जलने से मृत्यु हो गई। पांचों पांडवों को इससे गहरा आघात पहुंचा।

पांचों पांडव आत्म शान्ति के लिए अपनी माता कुन्ती तथा महारानी द्रोपदी सहित 22 वें तीर्थकर नेमिनाथ के समवशरण में गये। वहां पहुंचकर श्रद्धाभक्ति सहित उनको प्रणाम किया। वे स्तुति करने लगे– हे नाथ! आप इस संसार रूपी समुद्र को पार उतारने वाले नौका समान हैं, आप केवलज्ञान द्वारा संसार के अज्ञान को दूर करने वाले हैं, आप कामवासना को जीतने वाले हैं। स्तुति करने के पश्चात् वे सभी धर्मसभा में यथा स्थान बैठ गये।

तत्पश्चात् भगवान नेमिनाथ की दिव्यवाणी में धर्मोपदेश प्रारंभ हुआ। सुख का मुख्य साधन धर्म ही है। छः काय जीवों की रक्षा करना ही दया है । इस तरह मुनि धर्म और श्रावक धर्म का विस्तार से वर्णन

किया। अन्त में पांडवों ने अपने पिछले भवों की जानकारी के लिए भगवान से निवेदन किया। पिछले भवों का वर्णन सुनकर युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, माता कुन्ती, द्रोपदी का हृदय वैराग्य से भर गया। वे सभी कहने लगे कि इतना लम्बा समय सांसारिक भोगों में गुजार दिया। दीक्षा लेने का अब समय आ गया है।

पांचो पांडव वापिस अपने महलों की ओर गये और अपने पुत्रों को राज्य का भार सौंप दिया। तत्पश्चात् पांचों पांडवों ने परिग्रह त्याग, केश लोंच किया और तेरह प्रकार के चारित्र ग्रहण कर जिन दीक्षा ली। इसके साथ-साथ कुन्ती, द्रोपदी, सुभद्रा आदि ने आर्यिका राजमती के समीप जाकर जिन दीक्षा लेकर संयम धारण कर लिया।

विहार करते हुये ये पांडव सौराष्ट्र देश पहुंच गये। वहां के शत्रुंजय पर्वत पर आत्मध्यान में लीन हो गये। दैवयोग से दुर्योधन का भांजा कुमुर्धर वहां पहुंच गया। जो अत्यन्त क्रूर स्वभावी था। जब उसने पांडवों को आत्म लीन देखा तो उसके हृदय में वध करने की भावना जागृत हो गई। उसी समय कुमुर्धर ने लोहे के आभूषण तैयार करवाये। आभूषणों को अग्नि में खूब तपाकर पांचों पांडवों को पहिना दिये। इन पांचों मुनियों का शरीर जलने लगा और धुंआ निकलने लगा। पांचों भाईयों ने जान लिया कि उनका अन्तिम समय है और इस महा भयंकर उपसर्ग को आत्म चिंतवन में एकाग्रचित होकर ध्यान करना चाहिये। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन को मोक्ष पद मिला। तीनों ने हमेशा के लिये अतुलनीय मोक्ष प्राप्त किया । दो भाई नकुल, सहदेव उपसर्ग सहते हुये सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र हुये। जहां से पुनः मनुष्य शरीर धारण कर मोक्ष पद प्राप्त करेंगे।

राजमती, कुन्ती, सुभद्रा एवं द्रौपदी ने भी सन्यास धारण करके अपना शरीर छोडा। वे सभी स्त्री पर्याय को छोड़कर 16 वें स्वर्ग में देव उत्पन्न हुये। ये सभी पुनः मनुष्य भव को प्राप्त कर तप साधना द्वारा कर्मों का नाश कर मोक्ष पद प्राप्त करेंगें।

इन्हें भी जानिये

1. किसने ऐसी प्रतिज्ञा की थी कि मैं राम के दर्शन मात्र से मुनि दीक्षा ले लूँगा।

उत्तर –भरत।

02. किसने कहा था कि लंका में नन्दीश्वर पर्व में कोई हिंसा नहीं करेगा।

उत्तर –रावण।

03. किसने मांसाहारी डॉक्टर से अपने फोड़े का ऑपरेशन करवाने से मना कर दिया था ?

उत्तर –श्री गणेश प्रसाद वर्णी।

04. किसे राज्य देकर राम ने मुनि दीक्षा ली थी ?

उत्तर –अनंत लवण।

05. किसने कबूतर के बराबर अपना मांस देकर कबूतर की जान बचाई थी ?

उत्तर –राजा शिवि।

06. किनके हाथ से रावण की मृत्यु हुई थी ?

उत्तर –लक्ष्मण।

07. किसने अपने छोटे भाई के सिर पर शिला पटककर मार डाला था ?

उत्तर –कमठ।

08. किसने सीता को अपनी धर्म बहिन माना था ?

उत्तर –राजा वज्रजंघ।

09. पंडित टोडरमलजी के छोटे पुत्र का नाम क्या था जिन्होंने दिगम्बर तेरापंथ के प्रचार – प्रसार में बहुत बड़ा योगदान दिया ?

उत्तर –पण्डित गुमानीरामजी।

दो भाइयों का प्रेम

दो भाई थे। दोनों को आपस में बहुत प्रेम थे। जिनधर्म के भक्त थे और प्रतिदिन देवदर्शन, पूजन, स्वाध्याय साथ में ही करते थे। बड़े भाई का विवाह हो गया था उसका परिवार भी बड़ा था। छोटा भाई की अभी कुछ समय पहले ही विवाह हुआ था।

दोनों भाई खेती करके अपना जीवन यापन करते थे। दोनों के खेत एक दूसरे के खेत से जुड़े हुये थे। खेती की फसल आने पर दोनों ने अपनी फसल काटकर खेत में ही एक ओर रख दी। शाम को जब घर जाने का समय हुआ तो बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा कि भोजन का समय हो रहा है मैं भोजन करके आता हूँ फिर तुम भोजन करने चले जाना। ऐसा कहकर बड़ा भाई घर चला गया। छोटा भाई अपना अनाज देखकर सोचने लगा कि बड़े भाई का परिवार भी बड़ा है और मेरे घर में मात्र मैं और मेरी पत्नी। मुझे इतने अनाज की क्या आवश्यकता? थोड़ा अनाज भाई को दे देता हूँ। बड़े भाई से पूछूँगा तो मना ही करेंगे। ऐसा सोचकर उसने लगभग 20 बोरे अनाज बड़े भाई के अनाज में मिला दिया।

थोड़ी देर बाद बड़ा भाई भोजन करके वापस आया तो उसने छोटे भाई से कहा कि छोटे! तुम घर जाकर भोजन कर लो। छोटे भाई को घर भेजकर बड़ा भाई अपने खेत के अनाज को देखने लगा। उसे छोटे भाई के द्वारा दिये गये अनाज के बारे में कुछ पता नहीं चला। अपने अनाज को देखते हुये वह सोचता है कि मेरा छोटा भाई भोला है, उसके पास कुछ धन भी नहीं है। उसका परिवार बढ़ेगा तो उसके खर्च भी बढ़ेंगे। वह तो कुछ समझता ही नहीं। लेकिन मैं तो बड़ा भाई हूँ उसका ध्यान तो मुझे ही रखना पड़ेगा। पर छोटा बड़ा स्वाभिमानी है, ऐसे कुछ दूँगा तो लेगा नहीं। ऐसा सोचकर उसने अपने अनाज के ढेर में से 20 बोरा अनाज छोटे भाई के अनाज में ढेर में मिला दिया। ऐसा था दोनों भाईयों का प्यार। यहाँ 20 बोरे अनाज की बात नहीं है आपस के प्यार की बात है।

जब लौकिक भाई एक-दूसरे के हित का इतना ध्यान रखते हैं तो धर्म के सम्बन्ध से जो साधर्मी भाई हैं, उनमें तो एक दूसरे हित के लिये कितनी ऊँची भावना होनी चाहिये। साधर्मी वही है आत्म हित का संबोधन करे और लौकिक में भी साधर्मी पर संकट आने पर यथा संभव सहयोग करके उसे स्थिर करे। एक दूसरे के अहित की कल्पना भी नहीं होती। ऐसे होते हैं वीतरागी जिनशासन के साधर्मी।

Be aware .... food like LAYS have contents as "E631" which is made from PIG fat. As per Google, E series is all made for pig fat.

वैरागी हाथी

लंका के राजा रावण के सबसे प्रधान हाथी का नाम त्रिलोकमंडन था। राजा रावण ने सम्मेदशिखर के मधुबन में से इसको पकड़ा था।

बाद में तो श्रीराम और रावण के बीच बड़ी लड़ाई हुई, रावण मारा गया। राजा राम जीते और त्रिलोकमंडन हाथी को लेकर सब अयोध्या आए। यह हाथी बड़ा समझदार और चतुर था।

भरत को यह हाथी बहुत प्यारा था और इस हाथी को भी भरत से बहुत प्यार था। एक बार यह हाथी क्रोधित होकर भागा तो सर्वत्र हाहाकार मच गया, परन्तु भरत को देखते ही वह देखते ही वह शान्त हो गया, हाथी को पूर्वभव याद आया, भरत ने उसे वैराग्य का उपदेश दिया।

एक बार देशभूषण और कुलभूषण नाम के दो केवली भगवंत अयोध्या आये। श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न त्रिलोकमण्डन हाथी पर बैठकर उनके दर्शन करने गए। भगवंतों को देखकर चारों ही प्रसन्न हो गए, हाथी भी खुश हुआ। वहाँ भगवान का उपदेश सुनकर भरत ने तो दीक्षा लेली। हाथी को भी वैराग्य हो गया और उसने सम्यग्दर्शन के साथ व्रत अंगीकार कर लिए। पन्द्रह-पन्द्रह उपवास किए। इस वैरागी हाथी को व्रती जानकर नगरजनों ने भक्तिपूर्वक भोजन कराया।

हाथी जैसा प्राणी भी कितना धर्मसाधन कर सकता है, तो क्या हमें नहीं करना चाहिये।

एक था कबूतर

एक जंगल में कबूतरों (Pigeon) का समूह रहता था। वे आपस में बड़े प्रेम से रहते थे। उनके समूह में सबसे वृद्ध और अनुभवी कबूतर समय- समय पर अपने छोटे कबूतरों को सही सलाह देता रहता था। एक बार उसे आशंका हुई कि कोई शिकारी जंगल आकर कबूतरों पकड़ना चाहता था। उसने तुरंत सभी कबूतरों को अपने पास बुलाया और कहा कि भाईयो! मुझे ऐसा समाचार मिला है कि जंगल में एक शिकारी आने वाला है। शिकारी आयेगा, जाल फैलायेगा, दाने का लोभ दिखायेगा, जाल में फंसना मत। सबने ध्यान से समझ लिया। सभी कबूतरों ने सहमति में अपना सिर हिलाया। परंतु वृद्ध कबूतर को अपने साथियों की बहुत चिंता थी। उसने फिर पूछा कि तुम लोग क्या समझे ? सभी कबूतरों ने मिलकर कहा – शिकारी आयेगा, जाल फैलायेगा, दाने का लोभ दिखायेगा, जाल में फंसना मत। यह सुनकर वृद्ध कबूतर को थोड़ी संतुष्टि हुई। एक दिन जंगल में एक शिकारी आया, जाल फैलाया, कबूतरों को फंसाने के लिये जाल फैलाया, कुछ कबूतर दाने के लोभ में आ गये और जाल में बैठते ही फंस गये। वे जाल में फंसने के बाद भी यही कह रहे थे कि शिकारी आयेगा, जाल फैलायेगा, दाने का लोभ दिखायेगा, जाल में फंसना मत। वृद्ध कबूतर यह समाचार मिलते ही आया और कबूतरों को यह बोलते देखकर बहुत दुःखी हुआ और कहने लगा कि यह बात समझकर अपनी जान बचाने के लिये थी, रटने के लिये नहीं ।

ऐसे ही अज्ञानी जीव संसार के दुःखों से बचने की चर्चा करता है। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह में दुःख बताता है, परिवार में फंसे होने की बात करता है। फिर भी यही कार्य करता रहता है। मात्र बातें करने से सुख नहीं मिलता। इस बात को समझकर आचरण करे तो सच्चा सुख प्राप्त होगा।

कभी नहीं दिलाऊँगा

घटना मेरे बचपन की है। जब मैं 7 वर्ष का था। मेरे पापा हर रविवार को पूरे सप्ताह की आवश्यक चीजें लेने के लिये मार्केट जाते थे। एक बार मैं अपने पापा के साथ मार्केट गया था। घर की जरूरी चीजें लेने के बाद जब वे वापस आने लगे तो मुझे खिलौने की दुकान दिख गई। मैंने पापा से कहा कि पापा! पापा! मुझे खिलौने दिला दो ना। मेरा मासूम सा चेहरा देखकर पापा ने कहा – हाँ हाँ क्यों नहीं ? चलो। हम एक खिलौने की दुकान पर पहुँचे।

पापा बोले – देखो भावेश! कितने सारे खिलौने हैं बोलो तुम्हें क्या चाहिये ?

मैंने बहुत उत्साह से कहा – पापा! मुझे बड़ी वाली बंदूक चाहिये ?

हाँ हाँ! अभी लो – यह कहकर पापा ने दुकान वाले को बंदूक के रूपये देकर मुझे बंदूक दिलवा दी। बंदूक लेकर मैं बहुत खुश हुआ था और मुंह से धांय धांय आवाज निकालकर बंदूक चलाने लगा था।

घर पहुँचकर मैंने मम्मी को खुश होकर बंदूक दिखाई और बंदूक मम्मी की ओर करके बोला – मम्मी! मेरी गोली आ रही है। धांय धांय।

ये क्या लेकर आये हो ?– मम्मी ने पूछा था।

मम्मी! ये मेरी बंदूक है। मेरी बंदूक से बचो धांय धांय।

मम्मी उस समय तो कुछ नहीं बोली लेकिन दिन भर चुपचाप रही। मुझे लगा कि मम्मी मुझसे किसी बात पर नाराज हो गई हैं। रात्रि को जब मैं सोने के लिये बिस्तर पर लेट गया था, मेरी आंखें बंद थीं। परन्तु मुझे पापा – मम्मी की सारी बातें सुनाई दे रहीं थीं। मम्मी के मौन से पापा भी परेशान हो गये थे। पापा ने पूछा – क्या बात है तुम आज बहुत चुप हो। मम्मी ने अपना मौन तोड़ते हुये कहा कि आपने भावेश को बंदूक दिलाकर अच्छा नहीं किया। पापा ने आश्चर्य से पूछा – मैं कुछ समझा नहीं। क्या बच्चों को खिलौने दिलाकर पाप किया है ?

मैं खिलौने दिलाने के लिये नहीं, बंदूक दिलाने के बारे में बात कर रही हूँ।

पापा ने फिर पूछा – क्या बंदूक खिलौना नहीं है ?

खिलौना है, पर मेरे भावेश के लिये नहीं। जब से वह बंदूक लाया है धायं-धायं, ये मारा, वह मारा कर रहा है। आप समझते इसमें कितना पाप लगता है ?

अरे बच्चे हैं। इन्हें क्या पता पुण्य-पाप क्या होता है और कौनसी असली बंदूक है ? खिलौना ही तो है।

खिलौना होगा आपके लिये और पाप-पुण्य भावेश नहीं समझता, आप तो समझते हैं ना। बंदूक खिलौना है उसके भावेश के भाव तो असली हैं और फिर हम अपने भावेश को हिंसा के संस्कार देंगे क्या? हमें तो उसे इन हिंसा के खिलौनों से दूर रहने की शिक्षा देना चाहिये और हम लोग ही उसे हिंसा कि खिलौने दिलवा रहे हैं।

मैंने धीरे से आंख खोलकर देखा तो पापा सोचने की मुद्रा में चुपचाप खड़े थे और मम्मी अपनी बात कहे जा रही थीं।

यही उम्र है उसकी सीखने की। इस समय जो हम उसे सिखायेंगे वह सीखेगा। आज खिलौने में हिंसा करेगा कल साक्षात् हिंसा करेगा किसी को मारेगा। इसकी सारी जिम्मेदारी हमारी होगी।

पापा का चेहरा देखकर लग रहा था कि पापा को यह बात समझ में आ रही थी। पापा बहुत देर तक मौन रहकर बोले – संध्या! तुम बात सही कह रही हो। बच्चों के मोह में हम उनकी हर अच्छी-बुरी इच्छायें पूरी देते हैं। हमें बच्चों की जिम्मेदारी विवेकपूर्वक निभानी चाहिये अंधे होकर नहीं। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज के बाद से मैं किसी प्रकार की ऐसी सामग्री नहीं दिलाऊँगा जिससे हिंसा के संस्कार मिले।

यह सारी बात मैं लेटा हुआ सुन रहा था। मुझे भी सारी बात समझ में आ गई। आज मेरे दो बच्चे हैं लेकिन जब भी मैं खिलौने की दुकान पर जाता हूँ तो मुझे बचपन की यह घटना याद आ जाती है। आज मेरे बच्चे बहुत अच्छे और संस्कारवान हैं। ये सब मेरे माता-पिता के संस्कारों का फल है।

प्रश्न उत्तर

प्रश्न : पर्व और त्यौहार में क्या अंतर है ?

उत्तर : पर्व में विषयों का त्याग किया जाता है, त्यौहार में खाने, पीने, सजने धजने के साधन जुटाये जाते हैं।

प्रश्न : जब पूजन मे फल और फूलों को चढ़ाने का उल्लेख मिलता है, तब कुछ लोग फल फूल क्यों नहीं चढ़ाते ?

उत्तर : आचार्यों और जिनागम की आज्ञा है अप्रासुक हर, छल, पत्र, प्रवाल, कंद, फल, बीज और अप्रासुक जल त्याज्य और अभक्ष्य है। (वसुनंदी श्रावकाचार 265) एवं फूलों मे तो त्रसजीव होते ही है, तभी तो आयुर्वेद में भी कहा है फूलों को दूर से सूंघना चाहिये, अन्यथा उसके कीटाणु नाक द्वारा कशरीर में पहुच कर रोग उत्पन्न कर सकते हैं।

इस प्रकार सचित (जीव सहित) वस्तु जो अभक्ष्य है भगवान को कैसे चढ़ाई जा सकती है, जिसे वृत्ती त्यागी अप्रासुक नहीं खा सकते।

प्रश्न : मच्छर मारने के लिए डी.डी.टी. छिड़कना और ऑलआउट आदि लगाना विरोधी हिंसा है या संकल्पी ?

उत्तर : यह निश्चित संकल्पी हिंसा है, जो जैनधर्मानुयायी नहीं कर सकता है। विरोधी हिंसा तो देश, धर्म, समाज को सुरक्षित करने के भाव से हिंसा हो जाती है। यहां भाव रक्षा करने का है। सीता के शील की रक्षा करने के लिए राम रावण का युद्ध हुआ था, रावण को मारने के लिए नहीं। रावण तो युद्ध में मारा गया।

प्रश्न : भक्त नहीं भगवान बनेंगे, इसका क्या भाव है ?

उत्तर : इसका भाव है भक्त ही नहीं बने रहना है, भगवान बनना है।

प्रश्न : क्या वेदी पर कागज पर लिखा णमोकार मंत्र रखा और पूजा जा सकता है ?

उत्तर : वेदी पर केवल वीतराग प्रतिमा और यंत्र रखना चाहिए। कागज में लिखा मंत्र शास्त्र की अलमारी में रखना चाहिए।

PENTING

कृशांग शाह

अमित शाह, मलाड

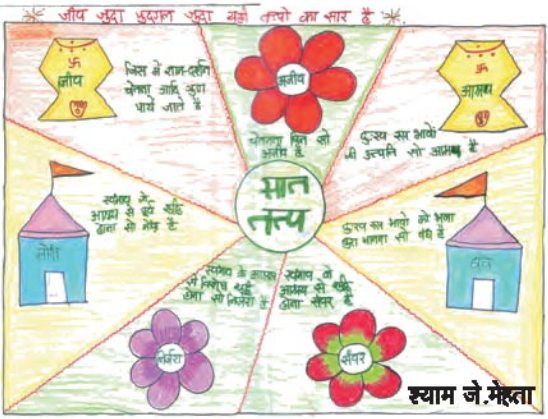

श्याम जे.मेहता

समकित जे.शाह

शाह हिरल जयेश

उत्तम तप धर्म

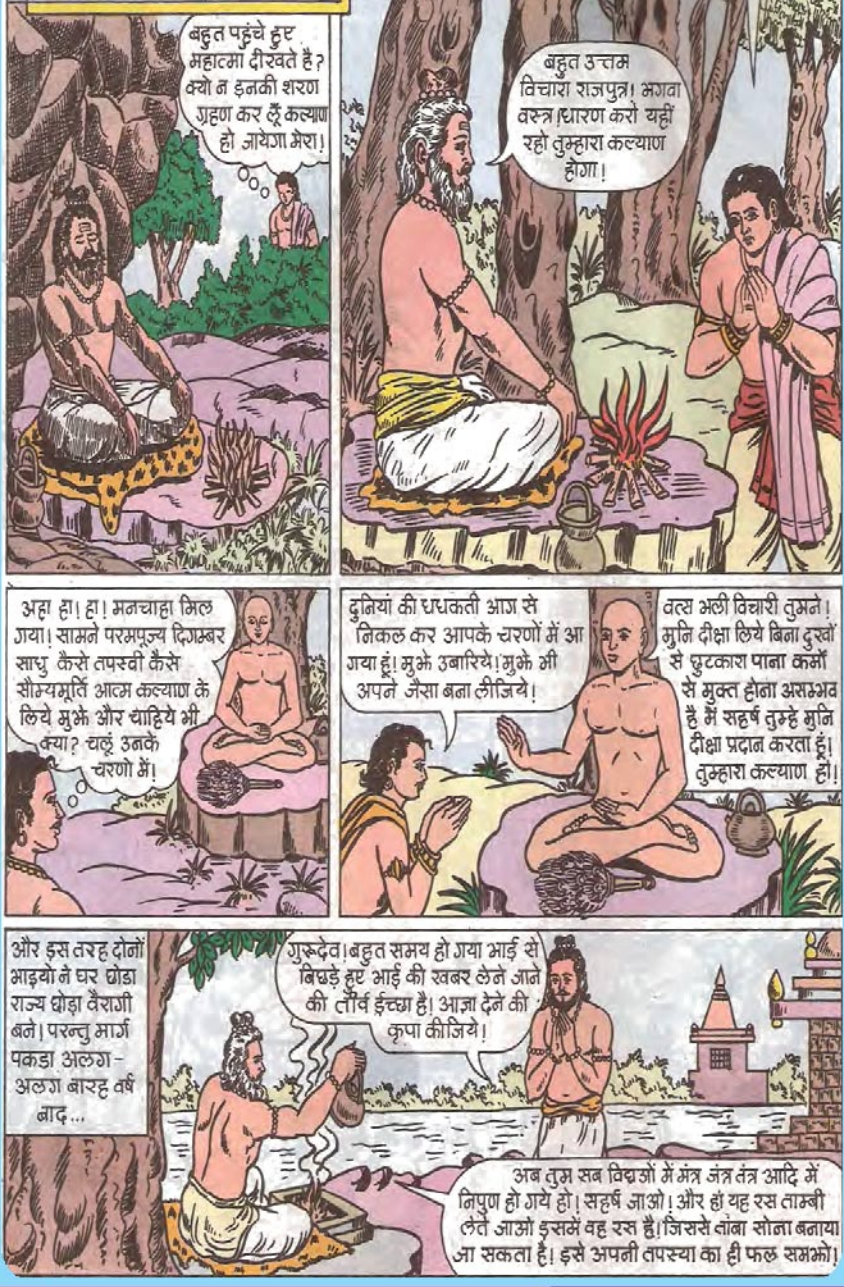
बहुत पहुंचे हुए महात्मा दीखते है? क्यो न इनकी शरण ग्रहण कर लूँ कल्याण हो जायेगा मेरा!
महाराज! कृपया मुझे अपना शिष्य बना लीजिये! घर छोड़कर आया हूं! आत्म कल्याण का इच्छुक हूं!
बहुत उत्तम विचारा राजपुत्र! भगवा वस्त्र धारण करो यहीं रहो तुम्हारा कल्याण होगा!
अहा हा! हा! मनचाहा मिल गया! सामने परमपूज्य दिगम्बर साधु कैसे तपस्वी कैसे सौम्यमूर्ति आत्म कल्याण के लिये मुझे और चाहिये भी क्या? चलूं उनके चरणो में!
दुनियां की धधकती आग से निकल कर आपके चरणों में आ गया हूं! मुझे उबारिये! मुझे भी अपने जैसा बना लीजिये!
वत्स भली विचारी तुमने! मुनि दीक्षा लिये बिना दुखों से छुटकारा पाना कर्मो से मुक्त होना असम्भव है मैं सहर्ष तुम्हे मुनि दीक्षा प्रदान करता हूं! तुम्हारा कल्याण हो!
और इस तरह दोनों भाइयो ने घर छोडा राज्य छोड़ा वैरागी बने! परन्तु मार्ग पकडा अलग-अलग बारह वर्ष बाद...
गुरूदेव! बहुत समय हो गया भाई से बिछड़े हुए भाई की खबर लेने जाने की तीव्र ईच्छा है! आज्ञा देने की कृपा कीजिये!
अब तुम सब विद्याओं में मंत्र जंत्र तंत्र आदि में निपुण हो गये हो! सहर्ष जाओ! और हां यह रस तुम्बी लेते जाओ इसमें वह रस है! जिससे तांबा सोना बनाया जा सकता है! इसे अपनी तपस्या का ही फल समझो!

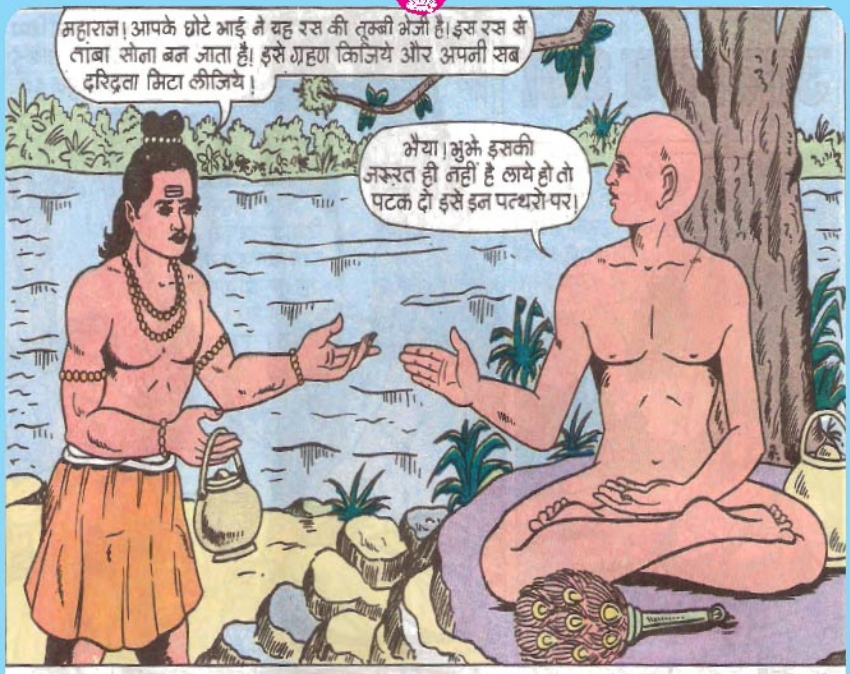

महाराज! आपके छोटे भाई ने यह रस की तूम्बी भेजी है। इस रस से तांबा सोना बन जाता है। इसे ग्रहण किजिये और अपनी सब दरिद्रता मिटा लीजिये!
भैया! मुझे इसकी जरूरत ही नहीं है लाये हो तो पटक दो इसे इन पत्थरों पर।
गुरूदेव! आपके भैया की हालत ठीक नहीं है! उनके पास तो लंगोटीं तक भी नहीं और खाने की न पूछिये। मैं उनके पास 3 दिन रहा! मुझे भी भूखे रहना पड़ा! मुझे तो लगता है उनका दिमाग भी खराब हो गया है। तूम्बी के रस को पत्थरो पर फिकवा दिया मैं क्या करता।
है! क्या गजब किया उन्होने! पत्थरों पर फिकवा दिया वह अमूल्य रस अब क्या करूं भैया का दुख देखा नहीं जाता बाकी बचा रस मैं स्वयं ले कर उनके पास जाता हूं!
भैया मैंने तुम्हारे पास एक रस भेजा था जो तुमने पत्थरो पर फिकवा दिया खैर मैं बाकी बचा रस लेकर मैं स्वयं आपकी सेवा में आया हूं! ले लो न इसे सोना बना कर सुखी हो लो!
तुम तो कहते थे इससे सोना बनता है। कहां बना सोना? क्या घर इसीलिये छोड़ा था? क्या वैराग्य इसीलिये लिया था? क्या कमी थी सोने की घर मैं और हां यदी सोना चाहिये तो लो कितना सोना चाहिये?
कितना भोला है यह इस रस को भी इस शिला पर फेंक देता हूं!

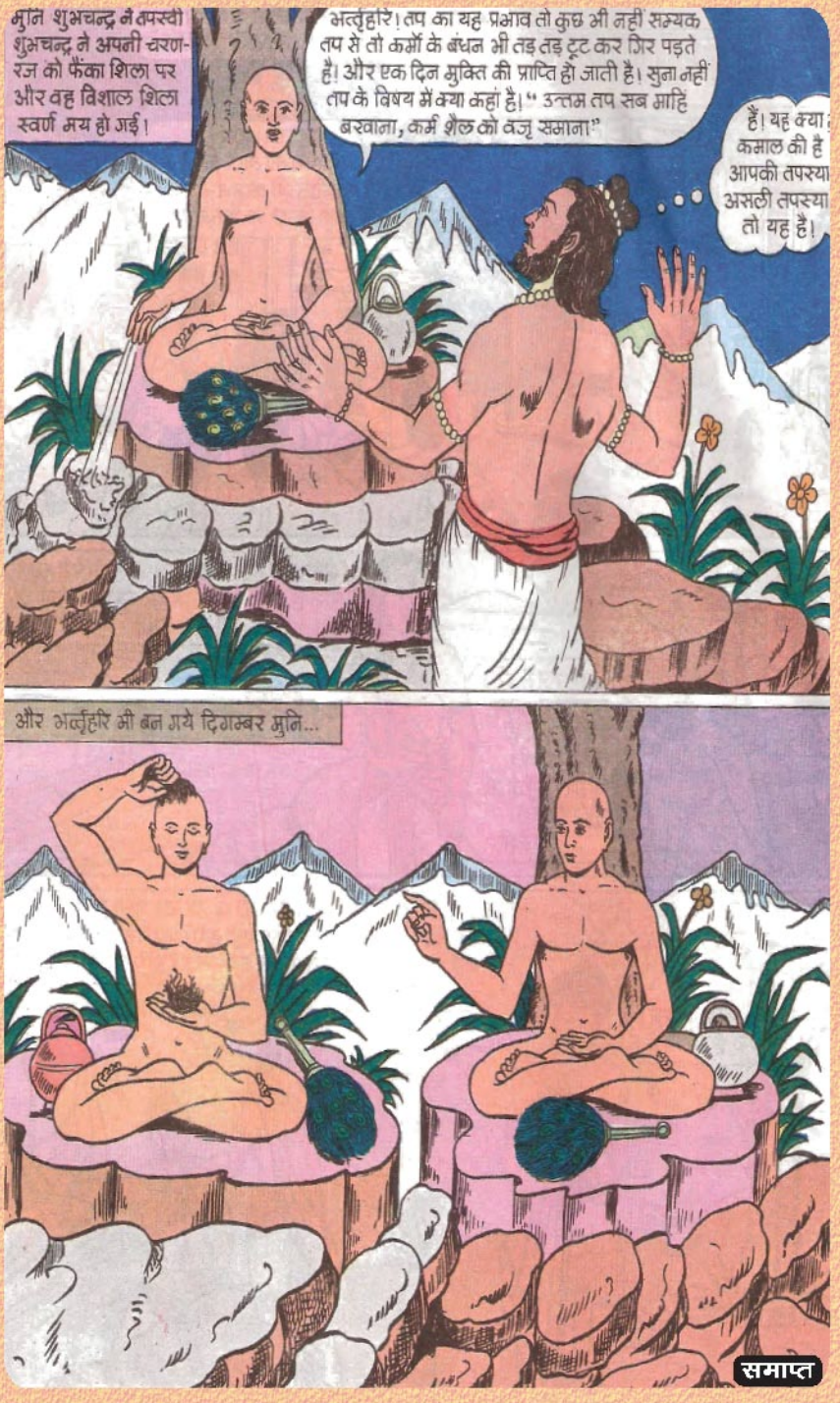
मुनि शुभचन्द्र ने तपस्वी शुभचन्द्र ने अपनी चरण-रज को फैंका शिला पर और वह विशाल शिला स्वर्ण मय हो गई।
भर्तृहरे! तप का यह प्रभाव तो कुछ भी नहीं सम्यक तप से तो कर्मों के बंधन भी तड़ तड़ टूट कर गिर पड़ते हैं! और एक दिन मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है। सुना नहीं तप के विषय में क्या कहा है। " उत्तम तप सब माहिं बखाना, कर्म शैल को वज्र समाना"
हैं! यह क्या कमाल की है आपकी तपस्या असली तपस्या तो यह है!
और भर्तृहरि भी बन गये दिगम्बर मुनि...
समाप्त